PG Sem III
CC 11

Topic – Physically handicapped Children

Page (1)

Q15. Present a programme for the education of Physically handicapped children.

शारीरिक विकलांग बच्चों के शिक्षा का एक कार्यक्रम प्रस्तुत करें।

क्रो एवं क्रो (Crow and Crow) के अनुसार —
शारीरिक विकलांग बच्चों से तात्पर्य ऐसे बच्चों का है जिनमें किसी न किसी प्रकार का आंगिक दोष या आंगिक विकृति रहती है। ऐसे बच्चों में ज्ञानात्मक-क्रियात्मक (Sensory-motor) दोष तथा अपंग अर्थात् शरीर के किसी अंग में विकृति रहती है। शारीरिक दोषों या शरीर के किसी अंग में विकृति को छोड़ कर ऐसे बच्चे सामान्य बच्चों के समान ही होते हैं।

शारीरिक विकलांग बच्चों के कुछ प्रमुख प्रकार हैं:—

① पूर्ण तथा आंशिक अन्धे (Complete and partially blind),
② पूर्ण तथा आंशिक बहरे (Deaf and hard of hearing),
③ भाषा दोष वाले बालक (Children with speech defects)
(5) अपंग या विकृत अंगों वाले बच्चे (Deformed children) आदि।

गंभीर दोषों वाले बच्चों को छोड़कर अन्य विकलांग बच्चों की योग्यता तथा बुद्धि स्तर सामान्य या औसत बच्चों के समान ही होती है। अतः विकलांग बच्चों के शिक्षण-कार्यक्रम का उद्देश्य उन्हें केवल पढ़ना-लिखना सीखाना, शिक्षित बनाना नहीं है बल्कि उन्हें इस योग्य बनाना है कि वे वैयक्तिक, सामाजिक तथा व्यवसायिक रूप से अपना ठीक-ठीक अभियोजन कर सके तथा अपना जीवन सफल बना सकें।

(1) ① पूर्ण तथा आंशिक अन्धे बच्चों का शिक्षण कार्यक्रम —

कुछ बालक पूर्ण रूप से अन्धे होते हैं और कुछ आंशिक रूप से। अनुसंधानों से पता चलता है कि पूर्ण अन्धापन अधिकांशतः जन्मजात होता है और आंशिक अंधापन प्रधानतः अर्जित होता है। एक दूसरे अनुसंधान के अनुसार दो-तिहाई दृष्टिदोष (Visual defects) वंशपरम्परागत (hereditary) तथा शेष अर्जित है। शिक्षा के दृष्टिकोण से आंशिक अन्धे बालकों की समस्या अधिक गंभीर है।

(1) ② पूर्ण अन्धे बालक की शिक्षण कार्यक्रम के लिए निम्नलिखित उपाय हैं:—

① ब्रेल पद्धति (Braille system):—
अन्धे बालकों को शिक्षित करने का सबसे उत्तम एवं उपयोगी उपाय इन्हें ब्रेल पद्धति के द्वारा शिक्षा दी जाए। इस पद्धति का आविष्कार Louis Braille ने 1855 में अन्धे व्यक्तियों को पढ़ाना-लिखाना सिखलाने के उद्देश्य से किया। इसमें बालकों को ब्रेल पुस्तक (Braille book), ब्रेल-स्लेट (Braille slate) या ~~टाइपराइटर (typewriter) व स्टाइलस (stylus) की मदद से लिखना~~ के द्वारा पढ़ना-लिखना सिखाया जाता है। ब्रेल अक्षरों (Braille alphabet) को स्टाइलस (stylus) की मदद से लिखना पड़ता है। ब्रेल अक्षर एक विशेष प्रकार के धातु-प्लेट (Metal-Plate) पर बिन्दुओं के खास आकारों (Pattern) में लिखे होते हैं। इन आकारों में 6 उठे हुए बिन्दु होते हैं जिनकी सहायता से वे विभिन्न अक्षरों को लिख पाते हैं। इसी तरह वे अपनी अंगुली की नोक (finger-tip) के द्वारा अंकित (imposed) अक्षरों को पढ़ते हैं।

वास्तव में अन्धे बालकों की शिक्षा में ब्रेल की यह सबसे बड़ी देन है। इस पद्धति के द्वारा स्वदेश एवं विदेश में अन्धे बालकों को शिक्षित किया जा रहा है। फिर भी, ब्रेल सामग्री (Braille materials) के साथ-साथ बोलने वाली पुस्तक (talking books) अर्थात् बोलने वाला बाजा (Phonograph) तथा विद्युत फीता (Electric tape) का भी उपयोग होना चाहिए। इससे बालकों की शिक्षा और भी सहज रूप से हो सकेगी।

② विद्युत पद्धति (Electric devices) — आधुनिक शिक्षा विशेषज्ञों ने अंधे बालकों की शिक्षा के लिए विद्युत-पद्धति का आविष्कार किया है। इसमें एक विद्युत पेन्सिल (electric pencil) होती है, जिसकी सहायता से बालक ब्रेल पुस्तक को पढ़ पाते हैं। पेन्सिल को नोकीली रेखाओं (Pointed lines) पर घुमाने से विशेष अक्षर की तरह ही आवाज पैदा होती है। आवश्यकता होने पर बालकों के कान में ईयर-फोन (ear-Phone) लगा दिया जाता है ताकि वे आवाज को ठीक-ठीक सुन और समझ सकें। इस तरह, इस पद्धति से अन्धे बालकों की शिक्षा एक बड़ी हद तक सहज एवं सफल बनाई जा सकती है।

③ विशिष्ट पाठ्यक्रम (Special curriculum):—
Wallin (वालिन) तथा Kolstoe (कालस्टो) ने अपने अध्ययनों के आधार पर अंधे बालकों के लिए एक विशिष्ट पाठ्यक्रम की सिफारिश की है। ऐसे बालकों में संगीत की चातुरी (talent) अधिक होती है। अतः उन्हें संगीत

बनने का पूरा-पूरा अवसर मिलना चाहिए। इसकी व्यवस्था उनके पाठ्यक्रम में होना चाहिए। इसी तरह, क्रियात्मक प्रशिक्षण (Motor training), भाषा-दोष को दूर करना, बोलने का प्रशिक्षण, उद्योग तथा ललितकला का समावेश भी पाठ्यक्रम में होना चाहिए। इन्हें व्यावसायिक (Vocational) प्रशिक्षण देना भी आवश्यक है।

(4) विशिष्ट आवासीय स्कूल (Special residential school) —

अंधे बालकों की सफल शिक्षा के लिए शिक्षा-मनोवैज्ञानिकों ने विशिष्ट आवासीय स्कूल की स्थापना पर जोर दिया है। इनके लिए एक अलग स्कूल की व्यवस्था होनी चाहिए जिसमें इनके पढ़ने तथा रहने का प्रबन्ध हो। जब इन्हें शिक्षण की मौलिक रूप-रेखा का ज्ञान हो जाए तो इन्हें किसी पब्लिक स्कूल में स्थानान्तरित कर देना चाहिए। ताकि वे जो बच्चे देख सकते हैं उनके साथ अभियोजित होना सीख सके।

पब्लिक-स्कूल में अन्धे बालकों को एक पढ़नेवाला (reader) तथा लिखने वाला (Writer) मिलना चाहिए। रीडर की मदद से वह पुस्तकों को पढ़ सकेगा तथा राइटर की सहायता से प्रश्नों का उत्तर लिख सकेगा। इसतरह वह स्वस्थ दृष्टिवाले ~~और~~ बच्चों की तरह लिख-पढ़ सकेगा। इसतरह, उपयुक्त शिक्षा-व्यवस्था के द्वारा अन्धे बालकों को शिक्षित तथा अभियोजित बनाकर समाज एवं देश का कल्याण किया जा सकता है।

(II) आंशिक अन्धे बालकों की शिक्षण कार्यक्रम :—

आंशिक या अर्ध अन्धे बालकों की शिक्षा के लिए निम्नलिखित व्यवस्था की जा सकती है —

(1) संरक्षण कक्षा (Conservation) — जो बालक किसी प्रकार के दृष्टि-दोष (visual defect) से पीड़ित हों उनके लिए एक विशिष्ट कक्षा का प्रबन्ध होना चाहिए। कक्षा में रोशनी का पूर्ण तथा उचित प्रबन्ध आवश्यक है। 20 फुट-कैण्डिल रोशनी सारे कमरे में हो तो अधिक अच्छा है। कमरे को आंतरिक तथा बाह्य-चमक (Glare) से सुरक्षित होना चाहिए। अतएव, कमरे में न चमकने वाला टेबुल, बेंच, कुर्सी आदि का प्रबन्ध हो। इसी तरह, चॉकबोर्ड (chalk board) का रंग भूरा-हरा होना चाहिए।

② विशिष्ट अध्यापन सामग्री (Special didactic materials)

शिक्षा-विशेषज्ञों ने ऐसे बालकों की शिक्षा के लिए कुछ खास किस्म की अध्यापन-सामग्री की सलाह दी है। मोटे अक्षरों में स्पष्ट रूप से छपी पुस्तकों का प्रबन्ध होना चाहिए ताकि दृष्टि शक्ति कमजोर होने पर भी बालक उन्हें आसानी से पढ़ सके। अध्ययनों से पता चलता है कि 18 से 24 Points की छपाई अधिक उपयुक्त है। दूसरी बात यह कि उन्हें हल्का पीला रंग (Cream colour) पर लिखने को कहा जाए और तीसरी बात यह कि उन्हें भारी लीड वाली पेन्सिल (heavy loaded pencil) से लिखने के लिए कहा जाए।

③ दृष्टि सम्बन्धी सहायता (Visual aids):—

दृष्टि-दोष से पीड़ित बालकों की शिक्षा की व्यवस्था सामान्य वर्ग (General class) में भी की जा सकती है। ऐसी हालत में उन्हें दृष्टि संबंधी सहायता मिलनी चाहिए ताकि वे सामान्य बालकों के साथ चल सकें इसके लिए आवश्यकता अनुसार चश्मा आदि का प्रबन्ध किया जा सकता है।

④ सामान्य बालकों के साथ आवृत्तिकरण (Recitation with normal Children):— संरक्षण कक्षा में पढ़ लेने के बाद ऐसे बालकों को सामान्य दृष्टि वाले बालकों के साथ रखा जाए तथा पढ़े गए विषयों को दुहराने के लिए कहा जाए। लेकिन यहाँ शिक्षक को बहुत सावधान रहना होगा ताकि वे आवश्यकता पड़ने पर उन्हें दृष्टि संबंधी सहायता दे सकें। इस प्रकार वे लिखना-पढ़ना सीखने के साथ-साथ सामान्य बालकों के साथ सामाजिक एवं संवेगात्मक अभियोजन कायम करना भी सीख सकेंगे।

अतः इन योजनाओं के आधार पर आंशिक या अर्द्ध अन्धे बालकों की शिक्षा की समुचित व्यवस्था की जा सकती है।